Yash Bharat

रिटायरमेंट को लेकर अब बढ़ी चिंता

नई दिल्ली, एजेंसी।

दुनिया भर में पांच में एक व्यक्ति को मालूम नहीं होता है कि रिटायरमेंट के दौरान उनकी आय का मुख्य स्रोत क्या होगा। 41 फीसदी लोगों ने माना कि एक हद तक वे रिटायरमेंट के लिहाज से पूरी तरह तैयार नहीं हैं। 64 फीसदी लोगों ने माना कि वे इस बात से चिन्तित हैं कि खर्च चलाने में दिक्कत आएगी। भारत में, सर्वेक्षण में भाग लेने वाले 51 फीसदी लोगों को चिन्ता है कि बुढ़ापे में उनका खर्च पूरा नहीं होगा और 10 में एक व्यक्ति जीवन के उत्तरार्ध में भी अपनी कमाई के लिए काम करते रहने की उम्मीद करते हैं।

सर्वेक्षण में चौंकाने वाले तथ्य उजागर

भारत के दो सबसे बड़े सरकारी बैंकों - केनरा बैंक और ओरियंटल बैंक ऑफ कामर्स तथा एचएसबीसी इंश्योरेंस होल्डिंग्स लिमिटेड के बीच संयुक्त उपक्रम - केनरा एचएसबीसी ओरियंटल बैंक ऑफ कामर्स लाइफ इंश्योरेंस कंपनी ने आज भारत में एचएसबीसी अध्ययन, 'यूचर ऑफ रिटायरमेंट : दि पावर ऑफ प्लानिंग' जारी किया। यह सर्वेक्षण 17 देशों में किया गया और इसके मुताबिक सर्वेक्षण में भाग लेने वाले भारतीयों ने आकर्षक आशावाद का परिचय दिया और दुनिया के सर्वश्रेष्ठ फाइनेंशियल प्लानर में से एक के रूप में उभर कर आए। एशिया प्रशांत में ये दूसरे नंबर पर सर्वश्रेष्ठ हैं और 74 फीसदी महसूस करते हैं कि वे अपने रिटायरमेंट से निपटने के लिए आर्थिक रूप से पर्याप्त तौर पर तैयार हैं। 69 फीसदी मानते हैं कि जीवन के उत्तरार्ध में वे अपने अभिभावकों से बेहतर रहेंगे। हालांकि, भारत में 51 प्रतिशत लोगों ने इस बात पर चिन्ता जताई कि बुढ़ापे में उन्हें खर्च चलाने में दिक्कत आएगी। भारत में 10 में एक व्यक्ति रिटायरमेंट के बाद भी अपनी कमाई के लिए काम करने की उम्मीद करता है। इससे पता चलता है कि रिटायरमेंट के प्रति आम आशावाद का नतीजा संतोष नहीं होना चाहिए। रिटायरमेंट के दौरान आय के स्रोत के संबंध में, दुनिया भर में सिर्फ 16 प्रतिशत को लगता है कि यह सरकारी पेंशन होगी।